काका की कविता

मैं शमां बनी, दीपक हो तुम
फिर कैसे रह पाये गुम सम

मैं महफिल की हूँ उजयारी
तुम चीरो जग की अंधियारी

आकाश आप, मैं नीला
तुम सौम्य सरल मै हू शीला

मै हवा बनू तुम झोका हो
ना आपस में कुछ धोखा हो

तुम सागर हो, मै लहर बनूं
तुम प्रान्त बनो मै शहर बनूं

हम गीत प्रेम रस के गायें
मिलकर नित दोनो मुसकायें

मैं पकड चुकी ना छूटेगी
यहं डोरी कभी न टूटेगी ।

(शमां–दीप सागर–लहर आकाश–नीला हवा–झोका इन नामो पर काका हातरसी ने यह कविता अमरीका मे छः सितम्बर उन्नीस सौ चौरासी को हमारे घर पर रहते हुये लिखी थी। यह दिन हमारे मिलन की चौबीसवी सलगिरह थी उसी दिन हमारी सगाई हुई थी ।)

Umesh Rashmi Rohatgi 24161 nilan Drive Novi MI 48375 USA (248)471-5786
Web page :www.rurohatgi.com email:rurohatgi@yahoo.com